कोकबोरोक भाषा

[स्रोत: द हिंदू](#)

त्रिपुरा विधानसभा के प्रवेश द्वार पर विरोध प्रदर्शन करने पर **त्विप्रा छात्र संघ (TSF)** के सदस्यों को हिरासत में लिया गया। वे पाठ्यपुस्तकों और सरकारी कार्यों में **कोकबोरोक (एक चीनी-तिब्बती भाषा) के लिये रोमन लिपि** को शामिल करने की मांग कर रहे थे।

- **भाषा और समुदाय: कोकबोरोक, त्रिपुरा में बोरोक लोगों (त्रिपुरी)** और आदिवासी समुदायों की मातृभाषा है, जिनमें **देबबर्मा, रियांग, जमातिया** और अन्य शामिल हैं।
  - **व्युत्पत्ति:** "कोक-बोरोक" शब्द कोक (भाषा) और बोरोक (मनुष्य) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "मनुष्य की भाषा" या "बोरोक लोगों की भाषा।"
- **लिपि और लेखन:** कोकबोरोक में मूलतः **कोलोमा लिपि** का प्रयोग किया जाता था, लेकिन अब इसकी कोई स्थानीय लिपि नहीं है और इसे बंगाली लिपि में लिखा जाता है।
- **इतिहास: कम-से-कम पहली शताब्दी ई. से अस्तित्व में है। राजरत्नाकर, त्रिपुरी राजाओं का एक इतिहास, शुरू में दुर्लोबेंद्र चोंटई द्वारा कोकबोरोक और कोलोमा लिपि में लिखा गया था।**
- **मान्यता:** कोकबोरोक को **वर्ष 1979 में त्रिपुरा की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई** (त्रिपुरा की **23.97%** आबादी द्वारा बोली जाती है (2011 की जनगणना)), जो **बंगाली** के बाद दूसरे स्थान पर है।
- **रोमन लिपि का प्रयोग:** आदिवासी समूहों द्वारा बोली जाने वाली कोकबोरोक को **दशकों से रोमन लिपि** में लिखा जाता रहा है। **श्यामा चरण त्रिपुरा और पबित्र सरकार** के नेतृत्व में दो आयोगों ने रोमन का समर्थन किया, जबकि सरकार ने बंगाली को प्राथमिकता दी।
  - जनजातीय समूह बंगाली या देवनागरी लिपि के खिलाफ हैं क्योंकि उनका मानना है कि इससे उनकी पहचान खत्म हो जाएगी और उनकी संस्कृति उन पर थोपी जाएगी।

और पढ़ें: [त्रिपुरा में NRC](#)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/the-kokborok-language